

24, 210. आशु बध्नाति किं प्रेम प्राजन्मात्तरसंस्तवः 28, 117. बहानन्दा दि-
वसाः 23, 94. *machen*: अयोऽन्यादासभावं च पणामत्र बबन्धुः so v. a. *stipulierten* KATHÁS. 22, 182. क्रमे बबन्धु क्रमितुम् BHATT. 2, 9. आकाशे लट्यं
(लत्त) बन्धु *im Luftraume ein Ziel sich machen* so v. a. *nach einer be-
stimmten Richtung im Luftraume blicken* ÇĀK. 31, 7, v. l. MUDRĀK. 6, 19.
31, 3. 62, 5. आकाशवदलत्त VIKRAM. 54, 4. — 6) *ansetzen* (Frucht u. s. w.);
schlagen (Wurzeln), *bekommen*, *bei sich zur Erscheinung bringen*, *zei-
gen*, *äussern*, *hegen*, *haben*: काले खलु समारब्धाः फलं बध्नाति नीतयः
RAGH. 12, 69. धृतिपुष्पमयमपि ज्ञानो बध्नाति न तादृशं चिरात्प्रभृति MĀLAV.
54. बद्धमूल s. des. चूतानां चिरनिर्गतापि कलिका बध्नाति न स्वं रजः
ÇĀK. 131. VIKRAM. 26. बद्धकोसरं सुच. 1, 210, 11. सौहृदम्, सख्यम्, शत्रुयम्
Freundschaft schliessen BHĀG. P. 1, 14, 33. KATHÁS. 38, 159. 28, 110. KUMĀRAS.
1, 20. RĀGA-TAR. 1, 155. 3, 268. RAGH. 18, 6. वैरम् *Feindschaft beginnen*, *in
ein feindschaftliches Verhältniss treten*: पूर्वबद्धवैरं R. 4, 53, 14. अयोऽन्य-
बद्धवैराणाम् *in gegenseitiger Feindschaft lebend* 6, 19, 2. ÇĀK. 48. LĪNGA-
P. bei MUIR, ST. 4, 326, 6. रविर्बद्धमीमपरिवेषमण्डलः RAGH. 11, 59. बद्ध-
राज्यं *die Herrschaft erlangt habend* RĀGA-TAR. 3, 282. बद्धोत्सवः so v. a.
einen Festtag habend KATHÁS. 21, 146. बद्धप्रतिज्ञा *gelobt habend* 38, 114.
बद्धनिशया 16, 116. बद्धो मानपरिग्रहे परिकरः Spr. 2084. (तत्पुरु) बध्नाति
संनिधिम् *nimmt seinen Aufenthalt* RĀGA-TAR. 4, 507. तत्रैव वद्धवसतिः 2,
97. बद्धद्वेष 446. बहानुशय R. GORR. 1, 2, 13. शिशो — बद्धस्त्रेका KATHÁS.
3, 17. (अद्भिः) बध्नातीभिर्मदरागशोभाम् RAGH. 16, 59. धृतिं बधान Spr. 2213.
M. 5, 47, v. l. बबन्ध च । नरवाकूनदत्ते — धृतिम् KATHÁS. 34, 105. नोपव-
नलताम् — चतुर्बध्नाति धृतिम् VIKRAM. 27. मर्कतो प्रीतिं बध्नाति MĀRK.
P. 68, 31. तस्मिन्बबन्ध सा न — कुमुदती भानुमतीव भावम् RAGH. 6, 36.
Spr. 74. KATHÁS. 17, 127. 49, 249. वत्सेश्वरं प्रति । गाढं बबन्ध सद्भावम्
13, 1. बद्धराग Spr. 812. बहानुरागा SOM. NALA 16. अतर्बद्धसद्वर्तभक्तिः
KATHÁS. 33, 216. मतेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलप्राप्तैकबद्धस्पृहः Spr. 791. 2043.
विन्बाधार्बद्धत्वं RAGH. 13, 16. Spr. 3310. शापात्तबद्धाश्च KATHÁS. 30, 53.
RĀGA-TAR. 4, 599. रतिं बध्नाति यत्र च M. 3, 47. KATHÁS. 3, 29. MĀRK. P.
26, 9. आक्रण्टयतमासादिभोजनार्था बबन्ध KATHÁS. 30, 97. RĀGA-TAR. 3,
245. वद्धग्रहे राशि KATHÁS. 49, 16. बद्धावस्थितिचापल Spr. 2322. बद्ध-
शङ्क KATHÁS. 15, 95. वप्राप्तेषु बद्धा बद्धा भित्तिशङ्काम् KIR. 3, 36. बद्धा-
द्यम् RĀGA-TAR. 6, 222. बद्धवेषयु so v. a. *zitternd* DAÇAK. in BENF. Chr.
187, 10. बद्धभसा (श्री) RĀGA-TAR. 3, 126. बद्धमौनं so v. a. *Stillschweigen
beobachtend* HARIV. 8170. RAGH. 13, 23. बद्धप्रतिश्रुतिं गुह्यमुखानि 16, 31.
यामिन्येषा बहुलजलदैर्बद्धभोमान्धकारा Spr. 2473. KATHÁS. 46, 207. दुमे-
षु फलं स्वयं बद्धम् *hat sich von selbst gezeigt* KUMĀRAS. 5, 60. बद्धं वदने
धर्माभसा ज्ञालकम् *hat sich eingestellt, ist da* ÇĀK. 29. बद्ध am Anf. adj.
comp., *hat häufig* (s. oben) eine ähnliche Bedeutung wie ज्ञात. सुबद्ध
beim Schol. zu GĀIM. 1, 32 scheint ganz am Platz seiend, wohl ange-
bracht zu bedeuten.

— *caus.* बन्धयति 1) *binden* —, *gefangen setzen lassen*: गाम् KAUC. 69.
अश्वम् ÇAT. Br. 13, 3, 4. बन्धयिष्यति वा पशिरथ वास्मान्वधिष्यति R.
2, 84, 4. KATHÁS. 49, 105. RĀGA-TAR. 6, 330. शतेन बन्धितः *eine Schuld
von hundert hat ihn in's Gefängnis gebracht* P. 2, 3, 24, Sch. Nach DUL-
TUP. 32, 14 bedeuten बन्धयति und बाधयति *zusammenbinden*; vgl. ब-
न्धयितृ. — 2) *zusammenfügen* —, *bauen lassen*: स सेतुं बन्धयामास
V. Theil.

ब्रवर्गैर्वणाम्भसि RAGH. 12, 70. RĀGA-TAR. 1, 156. *abdämmen lassen*: वि-
तस्तामेकतः स्थानात्कर्मकृद्भिर्बन्धयत् 5, 90.

— अनु 1) *entlang binden, anbinden* AV. 5, 19, 12. राष्ट्र एव विशमनु-
बध्नाति TBH. 1, 8, 2. TS. 6, 6, 5, 3. मेखलाम् GOBH. 3, 4, 17. अनुबद्धशिरः-
पादं चर्म KAUC. 24. 64. 81. चित्रां मालां चानुबद्धाम् MBH. 7, 76. दपितबाहु-
लतानुबद्धा *umfassen* Spr. 3894. धर्मबन्धानुबद्ध *gebunden, gefesselt* R.
GORR. 2, 113, 3. वचना — तस्या लोकः किलायं कामकृतो अनुबद्धः BHĀG.
P. 3, 21, 16. विषयेष्वनुबध्यत 4, 27, 10. उभयोरपि राजेन्द्र संबन्धेनानुब-
ध्यताम् । इत्वाकुकुलम् *in Verbindung bringen* R. 1, 72, 8. अयोऽन्यानु-
बद्ध (त्रिवर्ग) Verz. d. Oxf. H. 216, a, 19. अनुबद्धेन हृदा प्राणवन्द्यः कथाः
mit gefesseltem, ganz darauf gerichtetem Herzen BHĀG. P. 3, 22, 33. *pass.*
als Anubandha angefügt werden: द्विशकारो अनुबध्यते P. 3, 1, 44, Sch.
— 2) *in seinem Gefolge haben*: न शिष्यानुबध्नाति BHĀG. P. 7, 13, 8. अनु-
बद्ध *im Gefolge seiend, mit Etwas zusammenhängend, in Verbindung
stehend*: अनुबद्धार्थानर्थसंशयान्विचार्य DAÇAK. in BENF. Chr. 181, 1. अदो म-
मोपरि विधेः संरम्भो दाहणो मकान् । नानुबध्नाति कुशलम् so v. a. *bringt
keine Wohlfahrt* MBH. 3, 2562. हे वृषल ते तथा वित्तोऽस्तु यथा हिंसा-
मनुबध्नाति P. 6, 1, 141, Sch. — 3) *äussern, an den Tag legen, hegen, hu-
ben*: मनुष्येण शौटार्यमनुबध्नाता R. 5, 71, 6. पूर्वानुबद्धवैरेण शत्रुणा MĀRK.
172, 24. तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् MĀRK. P. 81, 22. — 4)
sich Jmd anhängen, auf dem Fusse folgen, nachlaufen: किमेनामनुब-
ध्नासि DHŪRTAS. 86, 3. को नु खल्वयमनुबध्यमानस्तपस्विनीभ्यामबालसहो
बालः ÇĀK. 101, 20. अनुबद्ध *begleitet von*: समाध्यनुबद्धयोग BHĀG. P. 3, 16.
26. — 5) *auf Etwas bestehen* KATHÁS. 49, 47. — 6) *zusammenhalten,
nicht reissen, nicht auseinandergehen*: भङ्गे ऽपि किं मृणालानामनुबध्नाति
तत्तवः Spr. 3314. — Vgl. अनुबन्ध *fg.*, अनुबन्धिन्, अनुबन्ध्य.

— पर्यनु s. पर्यनुबन्ध.

— अपि *mod. sich anbinden*: स्रजम् ऀÇV. GRHJ. 3, 8. — Vgl. अपिबद्ध.

— अयं *anbinden, med. sich anbinden* KAUC. 36. PĀR. GRHJ. 2, 6. मा-
लामवबध्य चाङ्गे MBH. 7, 80. अयवद्धशिरस्त्राणां 9, 3096. तस्य स्नेहावब-
द्धो ऽसौ *gefesselt* 12, 1438. धर्मपट्टावबद्ध *unbunden* VJUTP. 164. अयवद्ध
feststeckend, festsetzend: प्रूलमूलावबद्धास्थिखण्ड RĀGA-TAR. 2, 85. द्वी-
पिचमीवबद्ध (खड्ग) *steckend in* MBH. 6, 1787. शल्यं सुच. 1, 99, 15. 97, 21.
100, 9. कलिः 24, 9. भर्तारि प्राक्प्रीठप्रणयावबद्धं मनः *hängend an* KATHÁS.
13, 196. अयवबद्धोऽयं *nicht stockend* सुच. 1, 160, 6. 2, 184, 5. — Vgl.
अयवबन्ध.

— आ *anbinden, med. (im Epos auch act.) sich Etwas anbinden* AV.
3, 9, 3. 5, 28, 11. यत्तै देवी निर्हतिराबन्धं दोमं 6, 63, 1. परिक्लृप्तम् 81, 3.
मेखलाम् 133, 1. 9, 3, 6. रथं युक्तावबध्य ÇAT. Br. 5, 3, 2, 6. 4, 2, 24. 11, 8, 4.
3, 14, 6, 2. LĀTJ. 4, 3, 19. ऀÇV. GRHJ. 1, 22. GOBH. 3, 4, 20. पवित्रपा-
शैरावद्धः R. 1, 62, 19. MBH. 4, 173. स्रजः प्रह्लादस्य मूर्ध्नि आबन्ध HARIV.
13730. वर्म — आबन्ध MBH. 7, 3447. HARIV. 13163. 2052. R. 2, 96, 31.
3, 80, 3. KATHÁS. 13, 187. RĀGA-TAR. 4, 587. KAURAP. 15 bei HARR. H. 913.
आवद्धा मानुषाः सर्वे *in Banden seiend* MBH. 10, 71. दृष्टिपाशैरिवावद्धौ
KATHÁS. 34, 103. बहुमानेन चावद्धाः BHĀG. P. 8, 9, 28. — 2) *verbinden,
zusammenfügen*: वातावद्धाभवन्मेघाः (für वातावद्धा अभवन्) *zusammen-
geballt* MBH. 3, 9970. आवद्धाञ्जलि *die hohlen Hände zusammengefügt
habend* DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 14. — 3) *festhalten*: (ब्राह्मणम्) कपठे